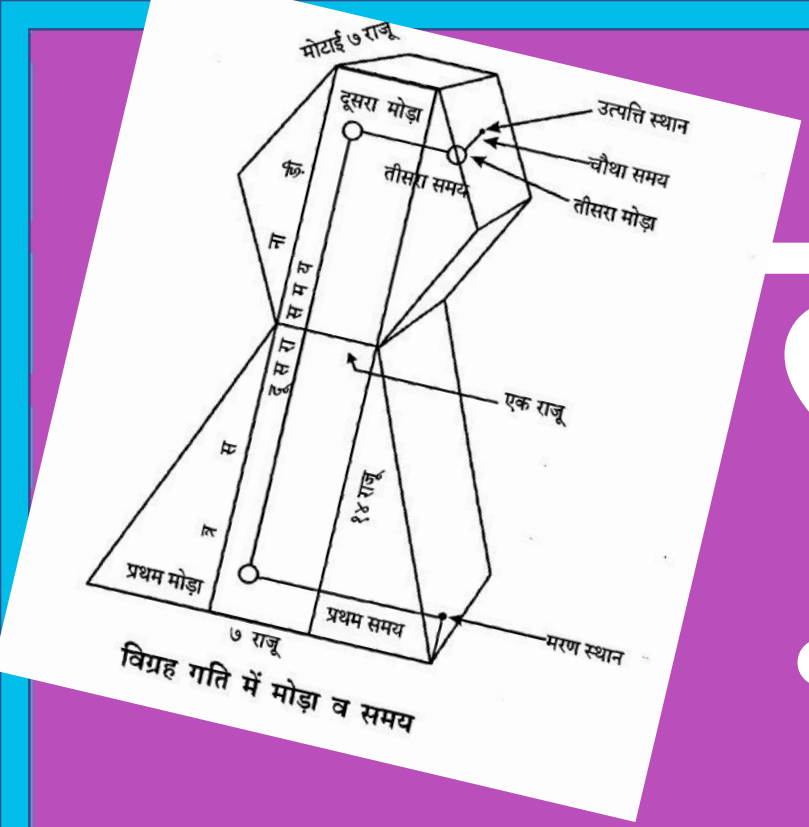

विग्रह गति में मोड़ा व समय

तत्त्वार्थ सूत्र

•द्वितीय अध्याय

Presentation Developed By:
श्रीमति सारिका छाबड़ा

www.JainKosh.org

330. तेषां पुनः संसारिणां त्रिविधजन्मनामाहितबहुविकल्पनवयोनिभेदानां शुभाशुभनामकर्मविपाकनिर्वर्तितानि बन्धफलानुभवनाधिष्ठानानि शरीराणि कानीत्यत आह –

औदारिक-
वैक्रियिकाहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि।।36।।

•औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस और कार्मण ये शरीर के 5 भेद हैं

www.JainKosh.org

- 331. विशिष्टनामकर्मोदयापादितवृत्तीनि शीर्यन्त इति शरीराणि।
- औदारिकादिप्रकृतिविशेषोदय-प्राप्तवृत्तीनि औदारिकादीनि। उदारं स्थूलम्। उदारे भवं उदारं प्रयोजनमस्येति वा, औदारिकम्।
- अष्टगुणैश्वर्ययोगादेकानेकाणुमहच्छरीरविधिकरणं विक्रिया, सा प्रयोजनमस्येति वैक्रियिकम्।
- सूक्ष्मपदार्थनिर्ज्ञानार्थमसंयमपरिजिहीर्षया वा प्रमत्तसंयतेनाह्रियते निर्वर्त्यते तदित्याहारकम्।
- यत्तेजोनिमित्तं तेजसि वा भवं तत्तैजसम्।
- कर्मणां कार्यं कार्मणम्। सर्वेषां कर्मनिमित्तत्वेऽपि रूढिवशाद्विशिष्टविषये वृत्तिरवसेया।

www.JainKosh.org

www.JainKosh.org

नाम	औदारिक	वैकियिक	आहारक	तैजस	कार्मण
स्वामी	मनुष्य व तिर्यंच	देव व नारको	छठे गुणस्थानवर्ती आहारक ऋद्धिधारी मुनिराज	सभी संसारी जीव	सभी संसारी जीव

www.JainKosh.org

औदारिक काय

औदारिक

- उदार, महान, पुरु, स्थूल, उराल— ये सभी एकार्थवाची हैं ।
- उदार में जो हो, उसे औदारिक कहते हैं ।

काय

- काय याने संचयरूप पुद्गलपिण्ड

औदारिक शरीर नामकर्म के उदय से उत्पन्न हुआ औदारिक शरीर के आकाररूप स्थूल पुद्गल स्कंधों का परिणाम औदारिक काय है ।

वैक्रियिक काय

वैगूर्व भी विक्रिया को कहा जाता है। जिससे शरीर का नाम होगा - वैगूर्विक,वैक्रियिक।

विक्रिया जिसका प्रयोजन है, वह वैक्रियिक है।

शुभ-अशुभ प्रकार के गुण अणिमा आदि अतिशयकारी ऋद्धि की महानता से सहित देव-नारकियों के शरीर को वैक्रियिक कहते हैं।

किस-किसका शरीर विक्रियारूप पाया जाता है ?

सभी देव, नारकी के।

बादर पर्याप्त तैजकायिक के।

बादर पर्याप्त वायुकायिक के।

कर्मभूमिया संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त मनुष्य व तिर्यंच के।

भोगभूमिया तिर्यंच एवं मनुष्य के।

नोटः देव, नारकी को छोड़कर अन्य सभी जीवों के विक्रिया पाए जाने का नियम नहीं है ।

विक्रिया

पृथक्

मूल शरीर से भिन्न विक्रिया करना

अपृथक्

मूल शरीर को ही विक्रियारूप करना

www.JainKosh.org

किस जीव के कैसी विक्रिया होती है?

	पृथक्	अपृथक्
देव	✓	✓
नारकी	✗	✓
भोगभूमिया मनुष्य, तिर्यंच	✓	✓
चक्रवर्ती	✓	✓
शेष कर्मभूमिया मनुष्य, तिर्यंच	✗	✓
बादर वायु / तेजकायिक	✗	✓

www.JainKosh.org

विशेष

औदारिक शरीर वालों की विक्रिया
औदारिक शरीर का ही परिणमन है।

www.JainKosh.org

आहारक शरीर

किनके होता है ?	• आहारक ऋद्धिधारी छठे गुणस्थानवर्ती मुनि के
कौन-से कर्म से ?	• आहारक शरीर नामकर्म के उदय से

www.JainKosh.org

आहारक शरीर कब निकलता है?

अपने क्षेत्र में केवली-श्रुतकेवली का अभाव होने पर एवं परक्षेत्र (जहां औदारिक शरीर से नहीं जा सकते) में सद्भाव होने पर

सूक्ष्म अर्थ को ग्रहण करने के लिये

संदेह को दूर करने के लिये

असंयम परिहार हेतु

तीर्थंकरों के दीक्षादि 3 कल्याणकों में गमन हेतु

जिन एवं जिनगृह की वंदना हेतु

तैजस शरीर

तेज से होने वाला तैजस शरीर है

जो दीप्ति का कारण है

शरीर स्कंध के पद्मराग मणि के समान वर्ण का नाम तेज है

www.JainKosh.org

कार्मण शरीर

ज्ञानावरणादि 8 कर्मों का स्कंध

कार्मण शरीर नामकर्म के उदय से जो शरीर है, वह कार्मण शरीर है।

www.JainKosh.org

कर्म

कार्मण शरीर

नोकर्म

औदारिक

वैक्रियिक

आहारक

तैजस

www.JainKosh.org

इन शरीरों का क्रम इसी प्रकार क्यों रखा हैं?

स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाने के कारण इन शरीरों का क्रम इस प्रकार रखा है ।

www.JainKosh.org

332. यथौदारिकस्येन्द्रियैरुपलब्धिस्तथेतरेषां कस्मान्न भवतीत्यत आह –

•परं परं सूक्ष्मम्।।37।।

आगे-आगे के शरीर सूक्ष्म हैं।

www.JainKosh.org

- 333. ‘पर’शब्दस्यानेकार्थवृत्तित्वेऽपि विवक्षातो व्यवस्थार्थगतिः। पृथग्भूतानां शरीराणां सूक्ष्मगुणेन वीप्सानिर्देशः क्रियते परम्परमिति।
- औदारिकं स्थूलम्, ततः सूक्ष्मं वैक्रियिकम्, ततः सूक्ष्मं आहारकम्, ततः सूक्ष्मं तैजसम्, तैजसात्कार्मणं सूक्ष्ममिति।।

www.JainKosh.org

नाम	औदारिक	वैकियिक	आहारक	तैजस	कार्मण
सूक्ष्मता	सबसे स्थूल	औदारिक से सूक्ष्म	वैकियिक से सूक्ष्म	आहारक से सूक्ष्म	सबसे सूक्ष्म

www.JainKosh.org

334. यदि परम्परं सूक्ष्मम्, प्रदेशतोऽपि न्यूनं परम्परं हीनमिति विपरीतप्रतिपत्तिनिवृत्त्यर्थमाह –

प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात्।।38।।

तैजस शरीर के पहले-पहले के शरीर प्रदेश की अपेक्षा असंख्यात गुणे-असंख्यात गुणे हैं।

www.JainKosh.org

- 335. प्रदिश्यन्त इति प्रदेशाः परमाणवः।
- संख्यामतीतोऽसंख्येयः। असंख्येयो गुणोऽस्य तदिदमसंख्येयगुणम्। कुतः ? प्रदेशतः। नावगाहतः।
- परम्परमित्यनुवृत्तेरा कार्मणात्प्रसङ्गे तन्निवृत्त्यर्थमाह प्राक्तैजसादिति।
- औदारिकादसंख्येयगुणप्रदेशं वैक्रियिकम्। वैक्रियिकादसंख्येयगुण-प्रदेशमाहारकमिति। को गुणकारः। पल्योपमासंख्येयभागः।
- यद्येवम्, परम्परं महापरिमाणं प्राप्नोति? नैवम्; बन्धविशेषात्परिमाणभेदाभावस्तूलनिचयायःपिण्डवत्।
-

www.JainKosh.org

336. अथोत्तरयोः किं समप्रदेशत्वमुतास्ति कश्चिद्विशेष इत्यत आह –

अनन्तगुणे परे।।39।।

तैजस और कार्मण शरीर के प्रदेश अनंतगुणे हैं।

www.JainKosh.org

- 337. प्रदेशत इत्यनुवर्तते, तेनैवमभिसंबन्धः क्रियते – आहारकात्तैजसं प्रदेशतोऽनन्तगुणम्, तैजसात्कार्मणं प्रदेशतोऽनन्तगुणमिति।
- को गुणकारः ? अभव्यानामनन्तगुणः सिद्धानामनन्तभागः।
-

www.JainKosh.org

नाम	औदारिक	वैकियिक	आहारक	तैजस	कार्मण
प्रदेशों को संख्या	सबसे कम (पर अनंत)	औदारिक से असंख्यात गुणे	वैकियिक से असंख्यात गुणे	आहारक से अनंत गुणे	सबसे ज्यादा (तैजस से अनंत गुणे)

www.JainKosh.org

यदि आगे-आगे के शरीर के प्रदेश असंख्यातगुने हैं तो वे स्थूल होने चाहिए, वे और सूक्ष्म कैसे हैं?

आगे आगे के शरीर के प्रदेश असंख्यात गुने होने पर भी उनका बंधन ठोस होने से वे सूक्ष्म हैं ।

जैसे रुई का ढेर और लोह पिण्ड ।

www.JainKosh.org

•338.
तत्रैतत्स्याच्छल्यकवन्मूर्तिमद्द्रव्योपचितत्वात्संसारिणो जीवस्याभिप्रेतगतिरोध प्रसङ्ग इति ? तन्न; किं कारणम्। यस्मादुभे अप्येते -

•अप्रतीघाते ।।40।।

तैजस और कार्मण शरीर अप्रतिघाती हैं ।

www.JainKosh.org

- 339. मूर्तिमतो मूर्त्यन्तरेण व्याघातः प्रतीघातः। स नास्त्यनयोरित्यप्रतीघाते; सूक्ष्मपरिणामात् अयःपिण्डे तेजोऽनुप्रवेशवत्तैजसकार्मणयोर्नास्ति वज्रपटलादिषु व्याघातः।
- ननु च वैक्रियिकाहारकयोरपि नास्ति प्रतीघातः ? सर्वत्राप्रतीघातोऽत्र विवक्षितः। यथा तैजसकार्मणयोरालोकान्तात् सर्वत्र नास्ति प्रतीघातः, न तथा वैक्रियिकाहारकयोः।

www.JainKosh.org

वैक्रियिक और आहारक शरीर भी सूक्ष्म होने के कारण किसी से रुकते नहीं है तो फिर उन्हें अप्रतिघाती क्यों नहीं कहा है?

वैक्रियिक और आहारक समस्त लोक में अप्रतिघाती नहीं है ।

आहारक और मनुष्यों का वैक्रियिक ढाई द्वीप से आगे नहीं गमन कर सकता है ।

देवों में वैक्रियिक शरीर त्रस नाली से भीतर ही सोलहवे स्वर्ग से ऊपर और तीसरे नरक के नीचे गमन नहीं कर सकता है ।

•340. आह किमेतावानेव विशेष उत कश्चिदन्योऽप्यस्तीत्याह -

•अनादिसम्बन्धे च।।41।।

तैजस और कार्मण शरीर का सम्बन्ध आत्मा से अनादि से भी है और सादी से भी है ।

www.JainKosh.org

- 341. 'च' शब्दो विकल्पार्थः। अनादिसंबन्धे सादिसंबन्धे चेति। कार्यकारणभावसंतत्या अनादिसंबन्धे, विशेषापेक्षया सादिसंबन्धे च बीजवृक्षवत्।
- यथौदारिकवैक्रियिकाहारकाणि जीवस्य कदाचित्कानि, न तथा तैजसकार्मणे। नित्यसंबन्धिनी हि ते आ संसारक्षयात्।

www.JainKosh.org

विशेष

अनादिसम्बन्धे च सूत्र में च शब्द विकल्पार्थक है

अर्थात् आत्मा का तैजस और कार्मण शरीर से सम्बन्ध अनादि भी है और सादि भी है ।

बंध की परम्परा अपेक्षा अनादि सम्बन्ध है और

तैजस, कार्मण की प्रति समय निर्जरा भी होती रहती है और नवीन बंध भी होता रहता है उस अपेक्षा सादि भी है ।

www.JainKosh.org

•342. त् एते तैजसकार्मणे किं कस्यचिदेव भवत उताविशेषेणेत्यत आह –

•सर्वस्य।।42।।

•ये दोनों शरीर सभी संसारी जीवों के होते हैं ।

•343. ‘सर्व’ शब्दो निरवशेषवाची। निरवशेषस्य संसारिणो जीवस्य ते द्वे अपि शरीरे भवत इत्यर्थः।

www.JainKosh.org

तैजस और कार्मण शरीर की विशेषता

अप्रतिघात	न किसी से रुकता है, न किसी को रोकता है
अनादि-सम्बन्ध	अनादि-संतति अपेक्षा (सादि-निर्जरा अपेक्षा)
सभी क	सर्व संसारी जीवों क

www.JainKosh.org

344. अविशेषाभिधानात्तैरौदारिकादिभिः सर्वस्य संसारिणो यौगपद्येन संबन्धप्रसंगे संभविशरीर-प्रदर्शनार्थमिदमुच्यते –

तदादीनिभाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः।।43।।

- तैजस और कार्मण शरीर को लेकर एक जीव के एक समय में चार शरीर तक विभाग कर लेना चाहिए ।

www.JainKosh.org

- 345. 'तत्' शब्दः प्रकृततैजसकार्मणप्रतिनिर्देशार्थः। ते तैजसकार्मणे आदिर्येषां तानि तदादीनि। भाज्यानि विकल्प्यानि। आ कुतः ? आ चतुर्भ्यः। युगपदेकस्यात्मनः।
- कस्यचिद् द्वे तैजसकार्मणे।
- अपरस्य त्रीणि औदारिकतैजसकार्मणानि वैक्रियिकतैजसकार्मणानि वा।
- अन्यस्य चत्वारि औदारिकाहारकतैजस-कार्मणानीति विभागः क्रियते।

www.JainKosh.org

एक साथ एक जीव क कितने शरीर

कौन से

2	तैजस, कार्मण	
3	तैजस,कार्मण, औदारिक	तैजस,कार्मण, वैकियिक
4	तैजस,कार्मण, औदारिक, आहारक	तैजस,कार्मण, औदारिक, वैकियिक

www.JainKosh.org

एक साथ एक जीव क कितने शरीर

	तैजस	कार्मण
2	स्वामी	
	मोड़े वाली विग्रह गति में स्थित जीव	

www.JainKosh.org

एक साथ एक जीव क कितने शरीर

3	तैजस	कार्मण	औदारिक
स्वामी	मनुष्य,तिर्यंच		
3	तैजस	कार्मण	वैकियिक
स्वामी	देव,नारको		

www.JainKosh.org

एक साथ एक जीव क कितने शरीर

4 | तैजस | कार्मण | औदारिक | आहारक

स्वामी: छठे गुणस्थानवर्ती आहारक ऋद्धिधारी मुनिराज

4 | तैजस | कार्मण | औदारिक | वैकियिक

स्वामी: विकिया ऋद्धिधारी मनुष्य/तिर्यंच

www.JainKosh.org

346. पुनरपि तेषां विशेषप्रतिपत्त्यर्थमाह –

निरुपभोगमन्त्यम्।।44।।

अंत का कार्मण शरीर उपभोग रहित है ।

www.JainKosh.org

- 347. अन्ते भवमन्त्यम्। किं तत् ? कार्मणम्। इन्द्रियप्रणालिकया शब्दादीनामुपलब्धिरुपभोगः। तदभावान्निरुपभोगम्।
- विग्रहगतौ सत्यामपि इन्द्रियलब्धौ द्रव्येन्द्रियनिर्वृत्त्यभावाच्छब्दाद्युपभोगाभाव इति।
- ननु तैजसमपि निरुपभोगम् तत्र किमुच्यते निरुपभोगमन्त्यमिति ?
  - तैजसं शरीरं योगनिमित्तमपि न भवति, ततोऽस्योपभोगविचारेऽनधिकारः।

www.JainKosh.org

उपभोग

इन्द्रियों क द्वारा शब्द वगैरह क ग्रहण करने को **उपभोग** कहते हैं।

कार्मण शरीर में इस प्रकार का उपभोग न होने से वह **निरुपभोग** है।

तैजस शरीर को निरुपभोग क्यों नहीं कहा?

वह तो योग में भी नहीं निमित्त है अतः उसे यहाँ नहीं लिया ।

निरुपभोग और सोपभोग का विचार करते समय उन्ही शरीरों का अधिकार है जो योग में निमित्त होते हैं ।

www.JainKosh.org

348. एवं तत्रोक्तलक्षणेषु जन्मसु अमूनि शरीराणि प्रादुर्भावमापद्यमानानि किमविशेषेण भवन्ति, उत कश्चिदस्ति प्रतिविशेष इत्यत आह –

गर्भसम्मूर्छनजमाद्यम्।।45।।
गर्भ और सम्मूर्छन जन्म से जो शरीर होता है वह औदारिक शरीर है ।

www.JainKosh.org

- 349. सूत्रक्रमापेक्षया आदौ भवमाद्यम्। औदारिकमित्यर्थः।
- यद् गर्भजं यच्च संमूर्च्छनजं तत्सर्वमौदारिकं द्रष्टव्यम्।

www.JainKosh.org

- 350. तदनन्तरं यन्निर्दिष्टं तत्कस्मिन जन्मनीत्यत आह –

- औपपादिकं वैक्रियिकम्।।46।।
- उपपाद जन्म से जो शरीर उत्पन्न होता है वह वैक्रियिक शरीर होता है।

- 351. उपपादे भवमौपपादिकम्। तत्सर्वं वैक्रियिकं वेदितव्यम्।

www.JainKosh.org

•352. यद्यौपपादिकं वैक्रियिकम्, अनौपपादिकस्य वैक्रियिककत्वाभाव इत्यत आह –

•लब्धिप्रत्ययं च।।47।।

•लब्धि से भी वैक्रियिक शरीर होता है।

www.JainKosh.org

- 353. ‘च’ शब्देन वैक्रियिकमभिसंबध्यते। तपोविशेषाद्दद्धिप्राप्तिर्लब्धिः।
- लब्धिः प्रत्ययः कारणमस्य लब्धिप्रत्ययम्।
- वैक्रियिकं लब्धिप्रत्ययं च भवतीत्यभिसंबध्यते।

www.JainKosh.org

वैक्रियिक शरीर

- उपपाद जन्म से
- लब्धि से

www.JainKosh.org

वैकियिक शरीर

उपपाद जन्म स — देव व नारको को

लब्धि स

- मुनिराज को तप विशेष से प्राप्त ऋद्धि
- औदारिक शरीर का ही परिणमन

www.JainKosh.org

•354. किमेतदेव लब्ध्यपेक्षमुतान्यदप्यस्तीत्यत आह –

•तैजसमपि।।48।।

•तैजस शरीर भी लब्धि प्रत्यय होता है ।

•355. ‘अपि शब्देन लब्धिप्रत्ययमभिसंबध्यते। तैजसमपि लब्धिप्रत्ययं भवतीति।

www.JainKosh.org

तैजस शरीर

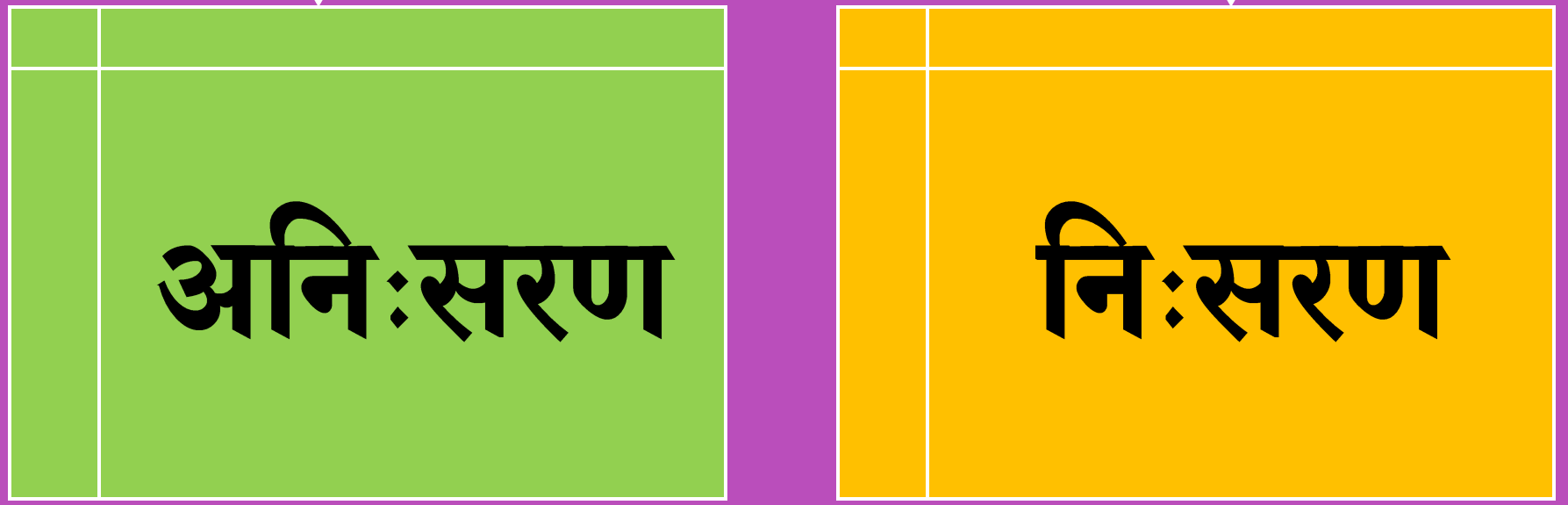

www.JainKosh.org

तैजस शरीर	अनिःसरण	निःसरण
स्वरूप	शरीरों को कांति देने वाला	शरीर से बाहर निकलने वाला
स्वामी	सभी संसारी जीव	ऋद्धिधारी मुनिराज
किसका परिणमन	तैजस वर्गणा का	आहार वर्गणा (औदारिक शरीर) का

www.JainKosh.org

निःसरण तैजस शरीर

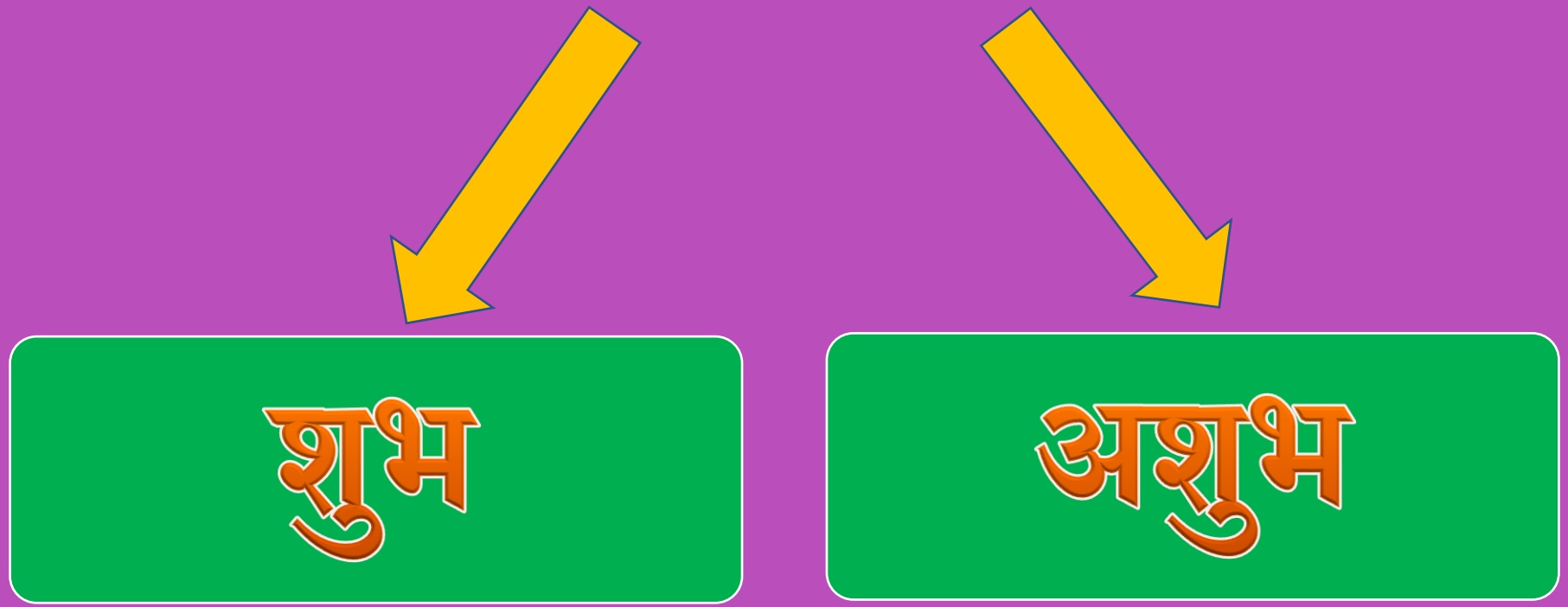

शुभ	अशुभ
❖करुणा क कारण निकलता है।	❖कोध क कारण निकलता है।
❖दाहिने कधे से निकलता है।	❖बायें कधे से निकलता है।

www.JainKosh.org

शुभ	अशुभ
❖श्वेत वर्ण व शुभ आकृति का होता है।	❖सिन्दूरी वर्ण व बिलाव क आकार का होता है।
❖रोग, मारी आदि को दूर करता है।	❖मन में रही विरुद्ध वस्तु एवं स्वयं को भस्मीभूत करता है।

शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव।।49।।

आहारक शरीर शुभ, विशुद्ध, व्याघात रहित है और प्रमत्त संयत मुनि के ही होता है ।

www.JainKosh.org

- 357. शुभकारणत्वाच्छुभव्यपदेशः। शुभकर्मण आहारककाययोगस्य कारणत्वाच्छुभमित्युच्यते अन्नस्य प्राणव्यपदेशवत्।
- विशुद्धकार्यत्वाद्विशुद्धव्यपदेशः। विशुद्धस्य पुण्यकर्मणः अशबलस्य निवद्यस्य कार्यत्वाद्विशुद्धमित्युच्यते तन्तूनां कार्पासव्यपदेशवत्।
- उभयतो व्याघाताभावादव्याघाति। न ह्याहारकशरीरेणान्यस्य व्याघातः। नाप्यन्येनाहारकस्येति।

www.JainKosh.org

- तस्य प्रयोजनसमुच्चयार्थः 'च'शब्दः क्रियते ।तद्यथा – कदाचिल्लब्धिविशेषसद्भावज्ञापनार्थं कदाचित्सूक्ष्मपदार्थनिर्धारणार्थं संयमपरिपालनार्थं च।
- आहारकमिति प्रागुक्तस्य प्रत्याम्नायः।
- यदाहारकशरीररं निर्वर्तयितुमारभते तदा प्रमत्तो भवतीति 'प्रमत्तसंयतस्य' इत्युच्यते।
- इष्टतोऽवधारणार्थं 'एव'- कारोपादानम्। यथैवं विज्ञायेत प्रमत्तसंयतस्यैवाहारकं नान्यस्येति। मैवं विज्ञायि प्रमत्तसंयतस्याहारकमेवेति। मा भूदौदारिकादिनिवृत्तिरिति।
-

www.JainKosh.org

शुभ

अच्छ कार्य क लिए होता है।

www.JainKosh.org

विशुद्ध

शुभ कर्म क कारण श्वेत वर्ण समचतुरस्र संस्थान

www.JainKosh.org

व्याघात रहित

ढाई द्वीप में न किसी से रुकता है, न किसी को रोकता है।

www.JainKosh.org

आहारक शरीर का स्वरूप

कहां से उत्पन्न होता है	उत्तमांग सिर में से
कितना बड़ा	1 हाथ प्रमाण
रंग	श्वेत वर्ण
संस्थान	समचतुरस्र
अवयव	शुभ नामकर्म के उदय से शुभ
संहनन और रसादि सप्त धातु	से रहित
व्याघात (बाधा) रहित	न किसी से रुकता, न किसी को रोकता है

आहारक शरीर का काल

जघन्य	• अन्तर्मुहूर्त
उत्कृष्ट	• अन्तर्मुहूर्त (परन्तु जघन्य से विशेष अधिक)

www.JainKosh.org

358. एवं विभक्तानि शरीराणि बिभ्रतां संसारिणां प्रतिगति किं त्रिलिङ्गसंनिधानं उत लिङ्गनियमः कश्चिदस्तीत्यत आह -

नारकसंमूर्च्छिनो नपुंसकानि ।।50।।
नारक और संमूर्च्छिन नपुंसक होते हैं।।50।।

www.JainKosh.org

- 359. नरकाणि वक्ष्यन्ते। नरकेषु भवा नारकाः। संमूर्च्छनं संमूर्च्छः स येषामस्ति ते संमूर्च्छिनः। नारकाश्च संमूर्च्छिनश्च नारकसंमूर्च्छिनः।
- चारित्रमोहविकल्पनोकषायभेदस्य नपुंसकवेदस्याशुभनाम्नश्चोदयान्न स्त्रियो न पुमांस इति नुपंसकानि भवन्ति।
- नारकसंमूर्च्छिनो नपुंसकान्येवेति नियमः। तत्र हि स्त्रीपुंसविषयमनोज्ञशब्दगन्धरूपरसस्पर्शसंबन्धनिमित्ता स्वल्पापिसुखमात्रा नास्ति।
-

www.JainKosh.org

360. यद्येवमवधीयते, अर्थादापन्नमेतदुक्तेभ्योऽन्ये संसारिणस्त्रिलिङ्गा इति यत्रात्यन्तं नपुंसक-लिङ्गस्याभावस्तत्प्रतिपादनार्थमाह -

न देवाः ।।51।।
देव नपुंसक नहीं होते ।।51।।

361. स्त्रैणं पौंस्नं च यन्निरतिशयसुखं शुभगतिनामोदयापेक्षं तद्देवा अनुभवन्तीति न तेषु नपुंसकानि सन्ति ।

www.JainKosh.org

362. अथेतरे कियल्लिङ्गा इत्यत आह –

शेषास्त्रिवेदा: ।।52।।
शेषके सब जीव तीन वेदवाले होते हैं।।52।।

www.JainKosh.org

- 363. त्रयो वेदा येषां ते त्रिवेदाः। के पुनस्ते वेदाः ? स्त्रीत्वं पुंस्त्वं नपुंसकत्वमिति।
- कथं तेषां सिद्धिः ? वेद्यत इति वेदः। लिंगमित्यर्थः। तद् द्विविधं द्रव्यलिंगं भावलिंगं चेति।
- द्रव्यलिंगं योनिमेहनादि नामकर्मोदयनिर्वर्तितम्।
- नोकषायोदयापादितवृत्ति भावलिंगम्।
-

www.JainKosh.org

- स्त्रीवेदोदयात् स्त्यायस्त्यस्यां गर्भ इति स्त्री।
- पुंवेदोदयात् सूते जनयत्यपत्यमिति पुमान्।
- नपुंसकवेदोदयात्ततदुभयशक्तिविकलं नपुंसकम्।
- रूढिशब्दाश्चैते। रूढिषु च क्रिया व्युत्पत्त्यर्थं च। यथा गच्छतीति गौरिति। इतरथा हि गर्भधारणादिक्रियाप्राधान्ये बालवृद्धानां तिर्यङ्मनुष्याणां देवानां कर्माणकाययोगस्थानां च तदभावात्स्त्रीत्वादिव्यपदेशो न स्यात्।
- त एते त्रयो वेदाः शेषाणां गर्भजानां भवन्ति।

www.JainKosh.org

वेद

स्त्री वेद

पुरुष वेद

नपुंसक वेद

www.JainKosh.org

वेद

भाव वेद

जीव के तीव्र मोह से उत्पन्न स्त्री, पुरुष, नपुंसक-भावरूप परिणाम

द्रव्य वेद

पुरुष, स्त्री, नपुंसकरूप शरीर

www.JainKosh.org

निरुक्ति से 'पुरुष' कौन है ?

पुरु गुण शेते	• उत्कृष्ट सम्यग्ज्ञानादि का स्वामी होता है ।
पुरु भोग शेते	• उत्कृष्ट इंद्रादिक भोगों का भोक्ता होता है ।
पुरुगुण करोति	• धर्म, अर्थ, काम, मोक्षरूप पुरुषार्थ को करता है।
पुरु उत्तमे शेते	• उत्तम परमेष्ठी के पद में स्थित होता है ।

('शीङ्' धातु का अर्थ स्वामी, भोगना, करना, स्थित होना आदि अर्थ हैं। इसलिए ऐसे अनेक अर्थ किये हैं ।)

www.JainKosh.org

पुरुष वेद

सामान्य स्वरूप

- पुरुष वेद नामक नोकषाय के उदय से
- होने वाली जीव की अवस्था-विशेष को
- पुरुष वेद कहते हैं ।

➢ कैसी अवस्था-विशेष ?

- स्त्री के साथ रमण की इच्छा ।

कषाय की तीव्रता के दृष्टांत

- तृण (तिनके) की अग्नि

निरुक्ति से 'स्त्री' कौन है ?

दोषैः छादयति

अर्थात् दोषों से आच्छादित करे

स्वयं को

दूसरों को

मिथ्यात्व, असंयम आदि से

वशकर हिंसादिक पापों से

इस प्रकार आच्छादन-रूप स्वभाव होने से 'स्त्री' कहा जाता है ।

स्त्री वेद

सामान्य स्वरूप

- स्त्री वेद नामक नोकषाय के उदय से
- होने वाली जीव की अवस्था-विशेष को
- स्त्री वेद कहते हैं ।

➢ कैसी अवस्था-विशेष ?

- पुरुष के साथ रमण की इच्छा ।

कषाय की तीव्रता के दृष्टांत

- कारीष (कंडे) की अग्नि

www.JainKosh.org

निरुक्ति से 'नपुंसक' कौन है ?

स्त्री-पुरुष दोनों के चिह्नों से रहित

दाढ़ी, मूँछ और स्तन आदि पुरुष और स्त्री के चिह्नों से रहित

तीव्र काम पीड़ा से भरा हुआ

www.JainKosh.org

नपुंसक

सामान्य स्वरूप

- नपुंसक वेद नामक नोकषाय के उदय से
- होने वाली जीव की अवस्था-विशेष को
- नपुंसक वेद कहते हैं ।
- ➢ कैसी अवस्था-विशेष ?
  - युगपत् दोनों के साथ रमण की इच्छा ।

कषाय की तीव्रता के दृष्टांत

- अवा (भट्टे) में पकती हुई ईंट की अग्नि

www.jainkosh.org

मनुष्य गति

कर्मभूमि		भोगभूमि/ म्लेच्छ खण्ड
गर्भज	सम्मूछंन	स्त्री, पुरुष
3 वेद	नपुंसक	

तिर्यंच गति

पंचेन्द्रिय

एकन्द्रिय विकलेन्द्रिय

कर्मभूमि

भोगभूमि

नपुंसक

गर्भज

सम्मूर्छन

स्त्री, पुरुष

3 वेद

नपुंसक

inKosh.org

एकेन्द्रिय से चौइन्द्रिय तक सभी सम्मूर्च्छन जन्म वाले होने से **नपुंसक** ही हैं।

www.JainKosh.org

द्रव्य व भाव वेद में समता-विषमता कहाँ संभव?

समानता ही होती है

- देव
- नारकी
- भोगभूमि के मनुष्य, तिर्यंच
- एकेन्द्रिय एवं विकलेन्द्रिय तिर्यंच
- सम्मूर्च्छन मनुष्य एवं तिर्यंच

विषमता संभव है

- कर्मभूमि के मनुष्य एवं तिर्यंच

नोट — जहाँ तीनों वेद पाये जाते हैं वहीं वेद विषमता होती है ।

www.JainKosh.org

364. य इमे जन्मयोनिशरीरलिंगसंबन्धाहितविशेषाः प्राणिनो निर्दिश्यन्ते देवादयो विचित्रधर्माधर्मवशीकृताश्चतसृषु गतिषु शरीराणि धारयन्तस्ते किं यथाकालमुपभुक्तायुषो मूर्त्यन्तराण्यास्कन्दन्ति उतायथाकालमपीत्यत आह –

औपपादिकचरमोत्तमदेहासंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ।।53।।

उपपादजन्मवाले, चरमोत्तमदेहवाले और असंख्यात वर्ष की आयुवाले जीव अनपवर्त्य अन्य आयु वाले होते हैं।।53।।

www.JainKosh.org

- 365. औपपादिका व्याख्याता देवनारका इति।
- चरमशब्दोऽन्त्यवाची।
- उत्तम उत्कृष्टः। चरम उत्तमो देहो येषां ते चरमोत्तमदेहाः। परीतसंसारास्तज्जन्मनिर्वाणार्हा इत्यर्थः।
- असंख्येयमतीतसंख्यान-मुपमाप्रमाणेन पल्यादिना गम्यमायुर्येषां त इमे असंख्येयवर्षायुषस्तिर्यङ्मनुष्या उत्तरकुर्वादिषु प्रसूताः।
- औपपादिकाश्च चरमोत्तमदेहाश्च असंख्येयवर्षायुषश्च औपपादिकचरमोत्तमदेहासंख्येयवर्षायुषः।

www.JainKosh.org

- बाह्यस्योपघातनिमित्तस्य विषशस्त्रादेः सति संनिधाने ह्रस्वं भवतीत्य पवर्त्यम्। अपवर्त्यमायुर्येषां त इमे अपवर्त्यायुषः। न अपवर्त्यायुषः अनपवर्त्यायुषः।
- न ह्येषामौपपादिकादीनां बाह्यनिमित्तवशादायुरपवर्त्यते, इत्ययं नियमः। इतरेषामनियमः।
- चरमस्य देहस्योत्कृष्टत्वप्रदर्शनार्थमुत्तमग्रहणं नार्थान्तरविशेषोऽस्ति। 'चरमदेहा' इति वा पाठः।

www.JainKosh.org

अनपवर्त्य आयु

परिपूर्ण आयु भोग कर मरण होना;

विष, शस्त्र आदि से इनकी आयु नहीं छिदती

www.JainKosh.org

अनपवर्त्य आयु

उपपाद जन्म	देव, नारको
चरमोत्तम देह	उसी भव से मोक्ष जाने वाले शलाका पुरुष
असंख्यात वर्ष आयु	भोगभूमिया मनुष्य और तिर्यंच

www.JainKosh.org

कदलीघात (अकाल मरण) किसे कहते हैं?

विष खाने से

रक्त क्षय से

भय से

शस्त्र घात से

संक्लेश से

श्वास रुक जाने से

आहार के न मिलने से

आयु का क्षय हो जाता है

उसे कदलीघात कहते हैं

www.JainKosh.org

उदीरणा किसे कहते हैं?

नहीं पके हुए कर्मों के पकाने का नाम उदीरणा है

आवली से बाहर के कर्म स्थिति के निषेकों को उदयावली में देना उदीरणा कहलाता हैं ।

www.JainKosh.org

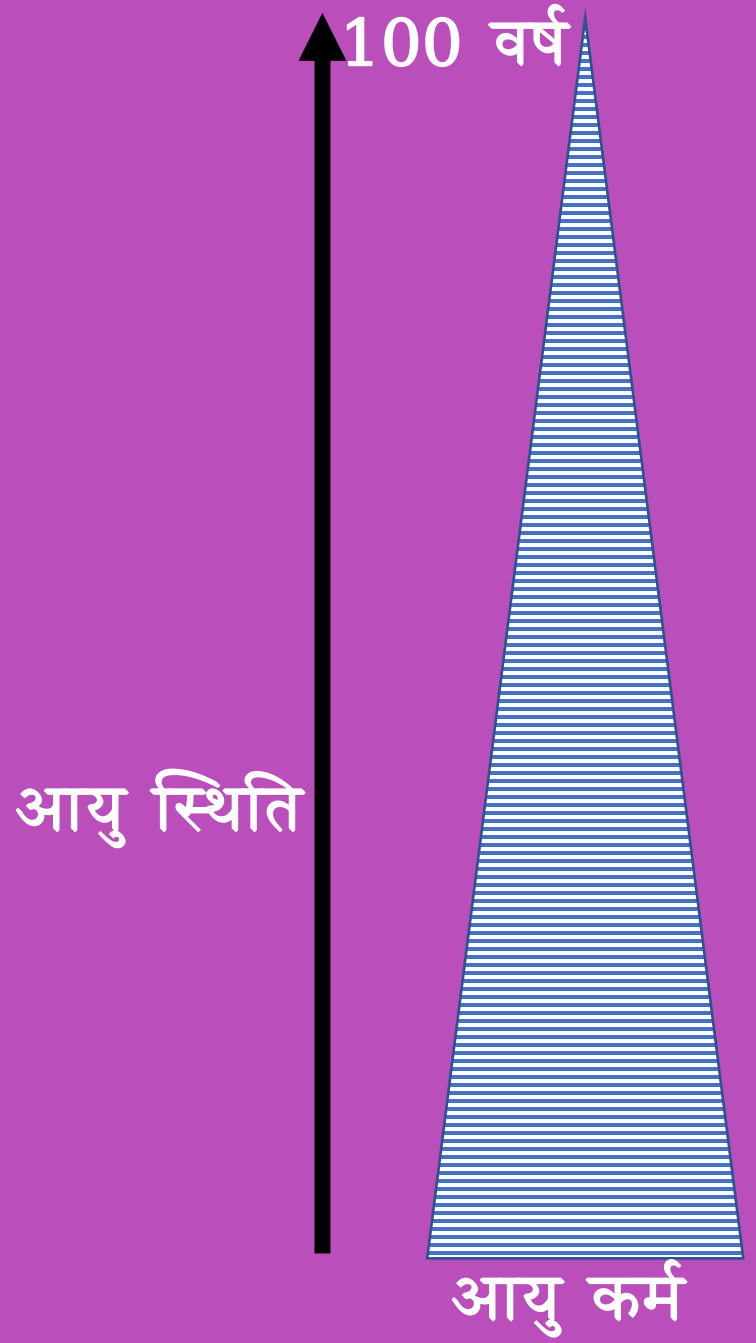

48 वर्ष के निषेकों की अंतर्मुहूर्त के समय में उदिरणा हो जाना जो शेष है

48 वर्ष जो शेष है

अंतर्मुहूर्त

52 वर्ष आयु बीत गई

कदलीघात (अकाल मरण)

जो आयु हम भोग रहे हैं वह बढ़ भी सकती है क्या?

वर्तमान आयु का बंध पूर्व भव में ही हो जाता है अतः उसका भोगते समय बढ़ाना संभव नहीं है ।

हाँ, वह कारण पाकर घट जरुर सकती है ।

www.JainKosh.org

- Reference : श्री गोम्मटसार जीवकाण्डजी, श्री जैनेन्द्रसिद्धान्त कोष, तत्त्वार्थसूत्रजी

- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - sarikam.j@gmail.com
  - ☎: :94066-82880
  - www.jainkosh.org